International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XII, Issue III, May – June 2025 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.997

भारतीय समाज में महिलाओं के सामाजिक उत्थान एंव राष्ट्र निर्माण में सावित्री बाई फुले के योगदान का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

विद्यावती रवि[1] एंव डॉ. सुनीता बाणकर[2]

1. शोधार्थी समाजशास्त्र रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)
2. सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

सारांश :– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यतेरमंते तत्र देवता' अर्थात जहां महिलाओं की पूजा होती है, वहां देवता वास करते हैं तथा 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी 'अर्थात हें जन्मदात्री धरती एवं मांतू स्वर्ग से भी महान है, कह कर महिलाओं का सम्मान करने वाले भारत में भी महिलाओं की स्थिति बहुलांश समयावधि में दयनीय ही रही है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके अधिकारों में तदनरूप परिवर्तन होते रहे हैं, लेकिन अधिकतम समय में स्त्रियां समाज के कल्पित सोपान क्रम में पुरुष से निचले पायदान पर स्थित रही हैं। सावित्री बाई ज्योतिराव फुले भारतीय समाज की एक ऐसी नारी है, जिसका नाम आते ही भारतीय संस्कृति में हलचल सा छा जाता है। जो एक प्रख्यात सामाजिक सुधारक, शिक्षाविद् और कवियत्री के नाम से जाना जाता है। जिन्होनें उन्नीसवीं शताब्दी के समय में महिला शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। सावित्री बाई फुले अपने पति ज्योतिराव फुले के मार्ग में चलना उचित समझा और समाज सुधार के कार्य में जुट गये। उनके द्वारा शिक्षा को मुख्य हथियार के रूप में चुना गया। वे समझ चुके थे, कि शिक्षा के बिना मानव विकास सम्भव नहीं है।

मुख्यशब्द :– सावित्री बाई फुल, महिला सशक्तिकरण और भारतीय समाज।

प्रस्तावना–:

वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सद्ढ़ृथी, परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था, उन्हें शिक्षा का अधिकार प्राप्त था, राजनीतिक अधिकार प्राप्त था, परंतु उत्तर वैंदिककाल से समाज में स्त्रियों की स्थिति में अवनति शरू हो गई उनकी स्वतत्रंता और उन्मुक्तता पर अनके प्रकार के अकुंश लगाए जाने लगे। मध्यकाल में स्थिति आरै भी दयनीय हो गई। 11 वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के बीच में महिलाओं की स्थिति में काफी गिरावट आई। एक प्रकार से यह महिलाओं के सम्मान, विकास आरै सशक्तिकरण के लिए अधंकार युग था। 19 वीं शताब्दी के मध्य काल से विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक आदोंलनों के कारण पुनः महिलाओं की स्थिति में सुधार होने लगा। सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध, बहु विवाह ,बाल विवाह, महिलाओं को शिक्षा व सपंत्ति विषयक अधिकारों का ना होना, वेश्यावृत्ति में वृद्धि आदि कई सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध कई समाज सुधारकों ने आंदोलन चलाए। इन समाज सुधारको में एक महत्वपूर्ण नाम है सावित्रीबाई फुले का, जिनका महिला सशक्तिकरण विशेषकर महिला शिक्षा एवं विधवा उत्थान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारक थीं। इसके अतिरिक्त वे आधुनिक मराठी काव्य की अग्रदूत भी मानी जाती हैं । इनको भारत की आधुनिक नारिवादियों में से एक माना जाता ह।ै सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 ई० को महाराष्ट्र के एक दलित परिवार में हुआ। मात्र 9 साल की उम्र में 1840 ई० में इनकी शादी क्रांतिकारी और समाज सुधारक ज्योतिबा फुले से हो गई। उस वक्त ज्योतिबा फुले सिर्फ 13साल के थे। ज्योतिबा महान क्रांतिकारी, समाजसेवी, लेखक, एव ं विचारक थे सावित्रीबाई फुले ने विवाह के बाद अपने पति ज्योतिबा फुले के सहयोग से पढना़ लिखना प्रारंभ किया और मराठी भाषा का ज्ञान भी प्राप्त किया। ब्रिटिश महिला मिसेज मिचेल के नॉर्मल स्कूल में उन्होंने अध्यापन कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अध्यापन प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद ही सावित्रीबाई के सार्वजनिक जीवन का सही अर्थों में शुरुआत हुई। उन्होंने क्रांतिकारी समाजसेवी पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर अपना संपूर्ण जीवन दबे कुचले, शोषितों को शोषण से मुक्ति दिलाने, अशिक्षा रूपी अंधकार को मिटाने एवं महिलाओं को शिक्षित करने के लिए समर्पित कर दिया।

सावित्रीबाई घर से बाहर कदम रख कर समाज सेवा के क्षेत्र में खुलेआम आने वाली पहली भारतीय महिला थी। उन्होंने हर बिरादरी और धर्म के महिलाओं और अछूतों के सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति के उत्थान के लिए काम किया। उस समय भारतीय समाज में महिलाओ ं की स्थिति सबसे अधिक दयनीय थी। हालां कि शूद्र निम्न अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे थे लेकिन महिलाओं की स्थिति समाज में शूद्र से भी बदतर थी। महिलाओं की समाज में दुर्दशा देखकर सावित्रीबाई फुले का मन विद्राहे कर उठा, उन्होनें सामाजिक रीतिरिवाज तथा परुष प्रधान समाजिक दासता से मुक्ति दिलाने एवं महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा को अपना हथियार बनाया।

महिला अधिकारों के लिए जीवन समर्पित करने वाली सावित्रीबाई ने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर वर्ष 1848 ई० में पुणे में भिड़ेवाड़ा नामक स्थान पर लड़कियों के लिए भारत का पहला कन्या विद्यालय खोला। इस बालिका विद्यालय की प्रथम महिला अध्यापिका सावित्रीबाई फुले बनी, जिसके साथ ही वह भारत की प्रथम महिला अध्यापिका भी बन गई आरै बाद में इस विद्यालय का प्रधानाचार्य बन गई। तत्कालीन रूढ़िवादी परपंरा अनुसार फुले दंपति का नारी शिक्षा का यह प्रयास धर्म विरोधी था। ज्योतिबा फुले ने गुलाम गिरी में लिखा है कि "सभी ब्राह्मण लोग ऐसे कहते है कि बालिकाओं के पाठशालाओं में दाखिला करते ही देश में अशांति पैदा हो जायेगी, समाज में बड़ा असंतोष पैदा होगा। इसलिए सरकार महिलाओं की शिक्षा से डरती है"1 शिक्षा पर केवल ब्राह्मणों का एकाधिकार था। दलित और महिलाओं के लिए शिक्षा ग्रहण करना पाप था। विष्णु शास्त्री चिपलुणकर लिखते हैं कि "ज्ञान भंडार की कुंजियां ब्राह्मणों के पास ही थी। इसलिए उनकी सहायता के बिना अन्य जाति को ज्ञान का लाभ मिलने का रास्ता बिल्कुल नहीं था" ।2 एकशूद्र महिला का शिक्षित होना, शिक्षिका बनना एवं समाज के ढाचें को बदलने का प्रयास करना पितृसत्ता आरै जाति व्यवस्था दोनों पर चाटे था।अतः सावित्रीबाई फुले के शिक्षिका बनने पर समाज में प्रखर विरोध हुआ। बालिकाओं की शिक्षा का विरोध न केवल उच्च जाति के द्वारा बल्कि निम्न जाति के पुरुषों द्वारा भी किया गया। जब वह स्कूल जाती थी तो लोग अक्सर उन पर कीचड़, गोबर और पत्थर फेंकते थे एवं गालियां देते थे, लेकिन फिर भी वह अपने कर्तव्य पथ से विमुख नहीं हुई। गोबर और पत्थर फेंकने पर भी सावित्री बाई कहती थी" मेरे भाइयों मुझे प्रोत्साहन देने के लिए आप मुझ पर गोबर और पत्थर नहीं फेक रहे हैं बल्कि फूलों की वर्षा कर रहे हैं, आप की इस करतूत से मुझे यही प्रेरणा मिलती है कि मैं निरंतर अपनी बहनों की सेवा करती रहूं, ईश्वर आपको सुखी रखे" ।3

सावित्री बाई फुले पहनी हुई साड़ी के अतिरिक्त एक और साड़ी अपने थैले में लेकर जाती थी और स्कूल पहुंचकर गंदी कर दी गई साड़ी बदल लेती थी। इतनी मुश्किलों का सामना करने के बावजूद फुले दंपत्ति ने पुणे और उसके आस पास के गांवों में केवल 4 वर्षों में लगभग 18 पाठशालायें खोल दी, जिनमें अधिकतर बालिकाएं और वंचित समुदाय के लोग पढ़ते थे। उन्हानें वर्ष 1854–55ई० में भारत में साक्षरता मिशन भी शुरू किया था। सावित्री बाई फुले का मानना था कि शिक्षा का मार्ग ही नारी मुक्ति का मार्ग ह ै यह बात उनकी रचनाओं में साफ जाहिर होती है 'संगीत नाटिका' कविता में सावित्री बाई कहती हैंः "स्वाभिमान से जीने हेतु बेटियों पढ़ो लिखो खूब पढ़ो। पाठशाला रोज जाकर नितअपना ज्ञान बढ़ाओ। हर इंसान का सच्चा आभूषण शिक्षा है। हर स्त्री को शिक्षा का गहना पहनना है" उन्होनें शिक्षा को गुलामी से मुक्ति का सबसे बड़ा हथियार बनाया। स्त्रियों एवं दलितों को शिक्षित करना अपने जीवन का मिशन बना लिया। क्रांति ज्योति सावित्री बाई फुले मात्र नारी शिक्षा आदांलेन तक ही सीमित नहीं रही। उनका लक्ष्य नारिया ें का चहमुंखी विकास करना था। इसके लिए उन्होनें नारी शिक्षा के अतिरिक्त विधवा शोषण, भ्रूण हत्या, बाल हत्या, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियां, जिसमें महिलाओं को निशाना बनाया जाता है के विरुद्ध महत्वपूर्ण कार्य किए। इसके लिए उन्होनें स्त्रियों को सगंठित करना शुरू किया । 1852 ई० में उन्होंने महिला सेवा मंडल का गठन किया। बाल विवाह के कारण हुए विधवाओं के साथ हुए जुल्म और शारीरिक शोषण का विरोध किया। समाज में विधवा की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। वे किसी शुभ काम में भाग नहीं ले सकती थी। अपने बच्चों के विवाह में भी वह सम्मिलित नहीं हो सकती थी । उसे रहने के लिए घर में एक कोना दे दिया जाता था। अपने घर में भी वह स्वतंत्र रूप से घूम नहीं सकती थी। विधवाओं को अपने बाल पति की मृत्यु हो जाने पर कटवाने पड़ते थे। जिसका मुंडन नहीं होता, उस विधवा के मृत्यु होने पर उसके शव को कोई उठाने के लिए तैयार नहीं होता था। एक बार एक विधवा ने बाल नहीं कटवाए थे, तो मृत्यु के बाद नाई ने बाल काटने से मना कर दिया। उसके अंतिम संस्कार के लिए उसके घर वाले भी तैयार नहीं हुए। अंत में मृत विधवा को पड़ोसी शूद्र से चिता में रखवा दिया गया"4। विधवाओं के मुंडन के खिलाफ सावित्री बाई ने उल्लेखनीय आंदोलन 'नाई हड़ताल' की। उन्होनें विधवाओं के बाल काटने के विरुद्ध

नाइयों से अनुरोध किया। इस प्रथा के विरुद्ध जागरूकता पैदा किया तथा इसमें सफलता हासिल की ।

बाल विवाह से हुई विधवाएं बलात्कृत होती और गर्भवती होने पर भ्रूण हत्या करती या शर्म से स्वंआत्महत्या कर लेती। सावित्री बाई फुले ने भ्रुण हत्या, बाल हत्या के विरुद्ध विधवा मां को शरण देना शुरू किया। इसके लिए उन्होंने 1853 ई० गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए'बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह'की स्थापना की। कोई भी विधवा आकर यहां अपने बच्चों को जन्म दे सकती थी, साथ ना रह पाए तो वहां छोड़कर जा भी सकती थी। उसका नाम गुप्त रखा जाता था। सावित्री बाई फुले ने इन बच्चों की मां के समान पालन पोषण करती थीं। एक बार काशी बाई नाम की ब्राह्मणी विधवा गर्भवती होने के कारण आत्महत्या करने जा रही थी। सावित्री बाई ने न केवल उसे बचाया, बल्कि उसके बच्चे को दत्तक पत्रु के रूप में गोद ले लिया और उसे पढ़ा लिखा कर डॉक्टर बनाया। इस प्रकार वे सामाजिक परिवर्तन की क्रांतिकारी शुरुआत घर से करती थीं। उन्होंने विधवाओं के लिए विधवा पुनर्विवाह केंद्र की स्थापना की, जहां विधवा पुनर्विवाह कराया जाता। उन्होनें कन्या शिशु हत्या रोकने के लिए प्रभावी पहल की थीं। इसके लिए उन्होंने न सिर्फ अभियान चलाया, बल्कि नवजात कन्या शिशुओं के लिए आश्रम भी खोले, ताकि उनकी रक्षा की जा सके "फुले दंपति ने अपनी सरंथाओं में पुत्र जन्म पर खुशी मनाना एवं पुत्री जन्म से निराश होने कि भावना काकड़ा विरोध किया अर्थात वे लडका व लडकी में कोई भेद नहीं करते थे" ।5

सामाजिक परिवतर्न के लिए 1873 ई० में सत्य शोधक समाज (सत्य की खोज के लिए समाज) की स्थापना ज्योतिबा फुले एवं सावित्री बाई फुले द्वारा की गई जिस के माध्यम से सत्यशोधक विवाह प्रथा शुरू किया गया। इस सरंथा द्वारा सैकड़ों विवाह बिना दहेज के साधारण तरीके से कम खर्च में कराए गए। ज्योतिबा की मृत्यु के बाद सत्य शोधक समाज की बाग डोर सावित्री बाई फुले के हाथों में सौंपी गई। 1891 ई० से लेकर 1897 ई० तक उन्होंने इस का नेतृत्व किया। इन वर्षों में उन्होंने 'सत्य शोधक समाज' और उससे संबंधित सभी संस्थाओं का उचित संचालन करके महिला शिक्षा एवं महिला द सशक्तिकरण के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। सावित्री बाई अध्यापिका आरै समाज सुधारक के साथ–साथ एक कवियित्री भी थी। वह अपनी कविताओं में हमेशा सामाजिक चेतना की बात करती थी । उनकी अधिकांश कविताओं का विषय नारी, शिक्षा, जाति और परतंत्रता की समस्याओं को लेकर थे।

उस समय सावित्री बाई फुले के लिए महिलाओं की शिक्षा का वकालत करना आसान नहीं था, क्योंकि महाराष्ट्र में बालगंगाधर तिलक के नेतृत्व में एक राष्ट्रवादी विमर्श चल रहा था, जिसमें तिलक सहित कई राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीयता की क्षति का हवाला देते हुए लड़कियों और गैर ब्राह्मणों के लिए स्कूलों की स्थापना का विरोध किया था। इन विकट परिस्थितियों में भी सावित्री बाई अपने मार्ग पर आगे बढ़ती रही। जब महात्मा फुले की मृत्यु हुई तो सावित्री बाई ने एक बार फिर समाज के समक्ष एक उदाहरण बनते हुए अतिंम संस्कार की रूढ़िवादी सामाजिक परपंराओं को नकारते हए अपने जीवन के सबसे बड़े संरक्षक और गुरू महात्मा फुले का अंतिम संस्कार अपने हाथों से किया। इस प्रकार वे तत्कालीन परंपराओं के भीतर में प्रथाओं के परिवर्तन के द्वारा अपनी सामाजिक क्रांति की कार्य सूची को आगे बढ़ाती थीं।

सावित्री बाई फुले ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह से जिया, जिसका उद्देश्य था, महिलाओं को शिक्षित बनाकर समाज में सही स्थान दिलवाना, विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना। उन्होनें समाजिक एकता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। सदियों से शोषित, पीड़ित, समाज में दोयमदर्जे प्राप्त एवं सभी अधिकारों से वंचित महिलाओं की उत्थान की दिशा में अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी आंदोलन को दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया, जो भारतीय महिला समाज सुधार एवं महिला सशक्तिकरण के क्षत्रे में मील का पत्थर साबित हुआ। पिछले दो शताब्दियों के नारी आंदोलन के इतिहास पर दृष्टि डालें तो सावित्री बाई फुले का नाम सर्वोपरि है। महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी चेतना जागृत करने वाली सावित्री बाई फुले सही अर्थों में क्रांति ज्योति थीं।

निष्कर्ष:–

सावित्री बाई फुले भारतीय समाज में फैले ऐसे कु प्रथा जो महिलाओं के उत्थान में बाधक बनता हो उनका खुलकर विरोध किया। ये पुनीत कार्य ऐसे समय में करने का साहस किया जब लोगों में धर्म एवं सामाजिक रूढ़ परम्परा के विरूद्ध सर उठाने की सामर्थ नहीं कर पा रहे थे। उसने अपने परिवार की सुख–दुःख की परवाह न करते हुये। देश के शोषित वंचित पीड़ित महिलाओं के अधिकारों के लिये अपना जीवन कुर्बान कर दिया। जो भारतीय महिलाओं की समाज सुधार की दिशा में अभूतपूर्व, क्रांतिकारी एवं मील का पत्थर साबित हुआ। इस तरह स` महिलो ं की जीवन मे ं बदलाव लाने एवं क्रांतिकारी परिवर्तन चेतना जागृत

करने वाली सावित्री बाई फुले सही अर्थों में प्रकाश पुंज रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –:

1. मा० फुले– गुलाम गिरी– समग्र वाङ्मय, पृ०–185 ।
2. विष्णु शास्त्री चिपलूनकर– निबन्ध माला, संपादक वासुदेव विनायक, पृ०–102 ।
3. जुगल किशारे , प्रकाश चन्द्र राय, रणजीत कुमार मडंल, अनुवादक– मोहनदास नैंमिश राय, भारत के अग्रणी समाज सुधारक, पृ०–27 ।
4. की रधनंजय, महात्मा ज्योतिराव फुले, फादर ऑफ इंडियन सोशल रेवोल्यूशन, पृ०–84।
5. महाराष्ट्र मानस, महात्मा ज्योतिराव फुले स्मृति शताब्दी विशेषांक, पृ०–49 ।